



# Akanksha

18 Oct 2003

08:00 PM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121181401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 18/10/2003  
दिन \_\_\_\_\_: शनिवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 20:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 35:19:38 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patan  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:12:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 20:06:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:14:44 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 21:53:29 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:52:08 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:24:36 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:32:28 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 00:53:16 तुला  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 16:33:21 वृष

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पुनर्वसु - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: सिद्ध  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: मेष  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ही-हिना  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: तुला

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	आश्विन	26
पंजाबी	संवत : 2060	कार्तिक	2
बंगाली	सन् : 1410	कार्तिक	1
तमिल	संवत : 2060	आइपसी	1
केरल	कोल्लम : 1179	तुलम	1
नेपाली	संवत : 2060	कार्तिक	2
चैत्रादि	संवत : 2060	कार्तिक	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2060	आश्विन	कृष्ण 8

### पंचांग

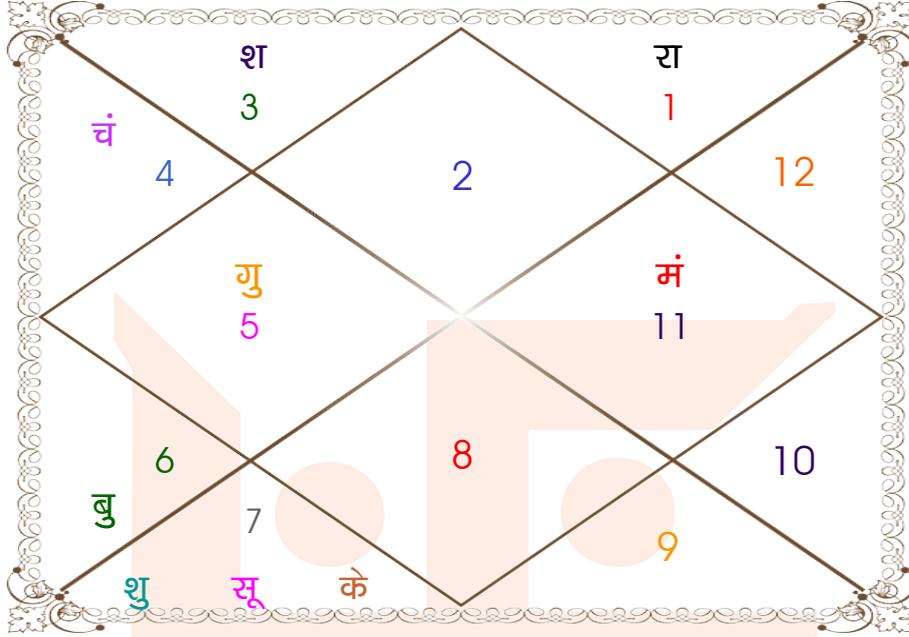
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 8  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 06:32:11  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 8  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:53:40 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शिव  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 09:07:42 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सिद्ध  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 18:01:14 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 57:44:16  
भभोग \_\_\_\_\_ : 64:58:29  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 1 वर्ष 9 मा 19 दि

### घात चक्र

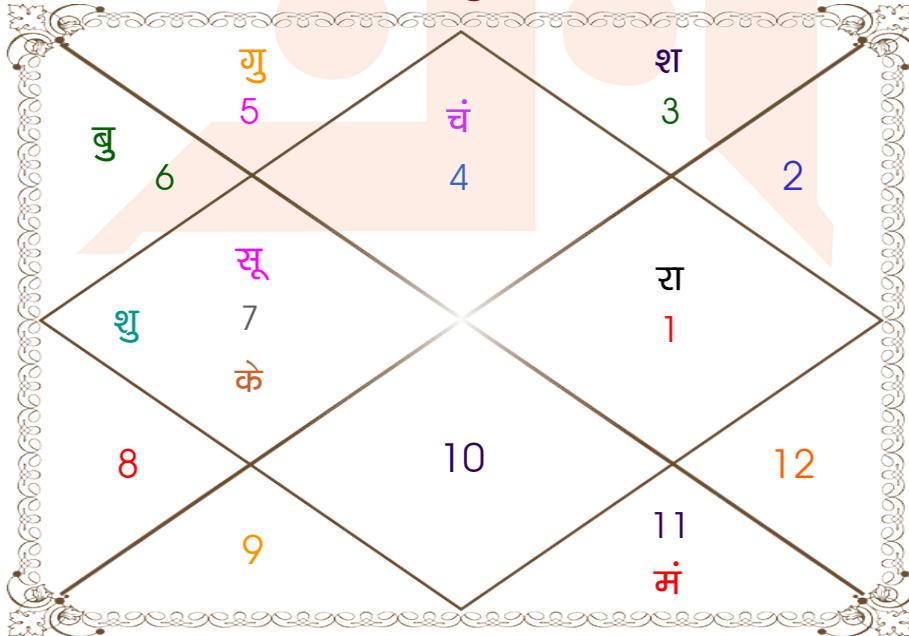
मास \_\_\_\_\_ : पौष  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : बुधवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
योग \_\_\_\_\_ : व्याघात  
करण \_\_\_\_\_ : नाग  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : श्वान  
लग्न \_\_\_\_\_ : तुला  
सूर्य \_\_\_\_\_ : सिंह  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मीन  
मंगल \_\_\_\_\_ : कन्या  
बुध \_\_\_\_\_ : मिथुन  
गुरु \_\_\_\_\_ : तुला  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : धनु

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

	रा	ल	श
मं			चं
			गु
		के सू शु	बु

### लग्न कुंडली

ल	रा	
श		मं
	चं	
गु	शु सू के	बु

विंशोत्तरी  
गुरु 1वर्ष 9मा 19दि  
गुरु  
18/10/2003  
08/08/2109

गुरु	07/08/2005
शनि	07/08/2024
बुध	07/08/2041
केतु	07/08/2048
शुक्र	07/08/2068
सूर्य	07/08/2074
चन्द्र	07/08/2084
मंगल	07/08/2091
राहु	08/08/2109

योगिनी  
पिंगला 0वर्ष 2मा 21दि  
सिद्धा  
08/01/2022  
08/01/2029

सिद्धा	20/05/2023
संकटा	08/12/2024
मंगला	17/02/2025
पिंगला	10/07/2025
धान्या	08/02/2026
भामरी	19/11/2026
भद्रिका	09/11/2027
उल्का	08/01/2029

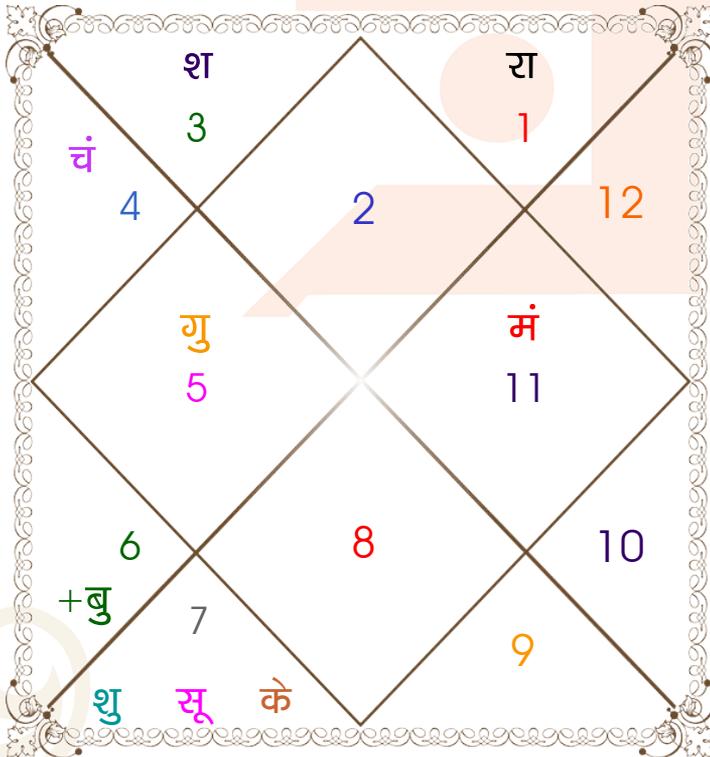
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	16:33:21	363:51:32	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	---
सूर्य			तुला	00:53:16	00:59:34	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	नीच राशि
चंद्र			कर्क	01:49:51	12:26:19	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	स्वराशि
मंगल			कुंभ	09:06:09	00:15:30	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
बुध	अ	कन्या	26:08:10	01:43:22	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	स्वराशि	
गुरु			सिंह	16:50:27	00:11:01	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
शुक्र			तुला	17:03:35	01:14:39	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मूलत्रिकोण
शनि			मिथु	19:16:58	00:00:50	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	मित्र राशि
राहु	व	मेष	26:50:10	00:00:06	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	शत्रु राशि	
केतु	व	तुला	26:50:10	00:00:06	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	सम राशि	
हर्ष	व	कुंभ	05:10:12	00:01:01	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	---	
नेप	व	मक	16:29:56	00:00:09	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	---	
प्लूटो			वृश्चि	24:00:16	00:01:33	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
दशम भाव			कुंभ	02:12:55	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	केतु	--

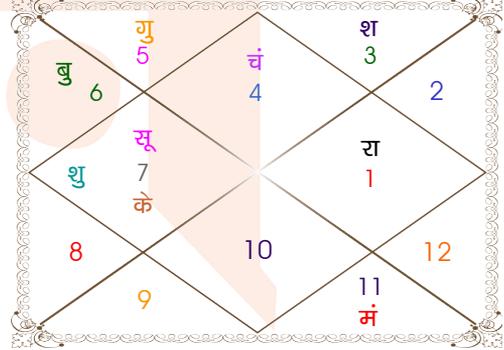
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:54:22

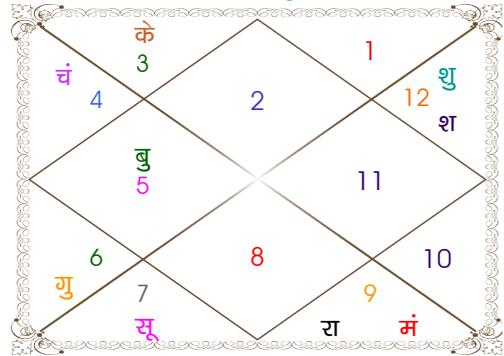
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 29:09:57	वृष 16:33:21
2	वृष 29:09:57	मिथुन 11:46:33
3	मिथुन 24:23:08	कर्क 06:59:44
4	कर्क 19:36:20	सिंह 02:12:55
5	सिंह 19:36:20	कन्या 06:59:44
6	कन्या 24:23:08	तुला 11:46:33
7	तुला 29:09:57	वृश्चिक 16:33:21
8	वृश्चिक 29:09:57	धनु 11:46:33
9	धनु 24:23:08	मकर 06:59:44
10	मकर 19:36:20	कुम्भ 02:12:55
11	कुम्भ 19:36:20	मीन 06:59:44
12	मीन 24:23:08	मेष 11:46:33

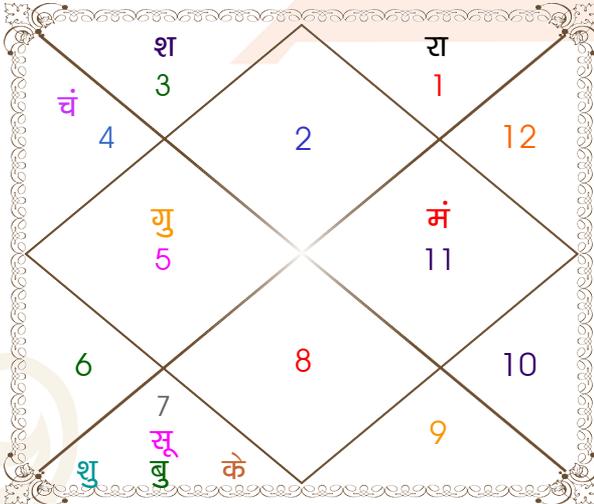
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	16:33:21
2	मिथुन	11:26:46
3	कर्क	05:29:40
4	सिंह	02:12:55
5	कन्या	04:11:22
6	तुला	10:43:44
7	वृश्चिक	16:33:21
8	धनु	11:26:46
9	मकर	05:29:40
10	कुम्भ	02:12:55
11	मीन	04:11:22
12	मेष	10:43:44

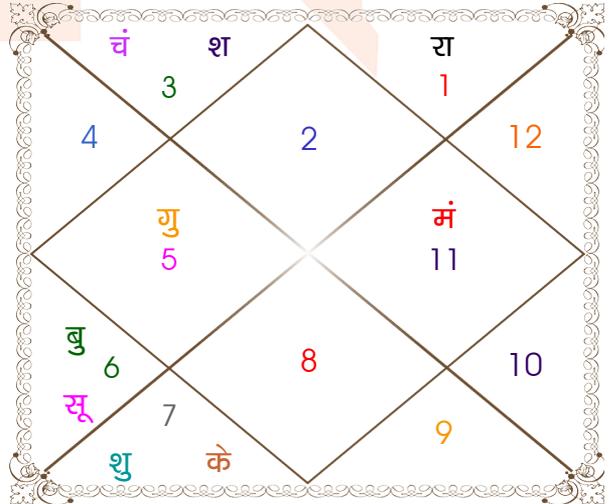
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : गुरु 1 वर्ष 9 मास 19 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
18/10/2003	07/08/2005	07/08/2024	07/08/2041	07/08/2048
07/08/2005	07/08/2024	07/08/2041	07/08/2048	07/08/2068
00/00/0000	शनि 10/08/2008	बुध 03/01/2027	केतु 03/01/2042	शुक्र 07/12/2051
00/00/0000	बुध 20/04/2011	केतु 01/01/2028	शुक्र 05/03/2043	सूर्य 06/12/2052
00/00/0000	केतु 29/05/2012	शुक्र 31/10/2030	सूर्य 11/07/2043	चंद्र 07/08/2054
00/00/0000	शुक्र 29/07/2015	सूर्य 07/09/2031	चंद्र 09/02/2044	मंगल 07/10/2055
00/00/0000	सूर्य 10/07/2016	चंद्र 05/02/2033	मंगल 07/07/2044	राहु 07/10/2058
00/00/0000	चंद्र 09/02/2018	मंगल 03/02/2034	राहु 26/07/2045	गुरु 07/06/2061
00/00/0000	मंगल 20/03/2019	राहु 22/08/2036	गुरु 02/07/2046	शनि 07/08/2064
18/10/2003	राहु 24/01/2022	गुरु 28/11/2038	शनि 10/08/2047	बुध 08/06/2067
राहु 07/08/2005	गुरु 07/08/2024	शनि 07/08/2041	बुध 07/08/2048	केतु 07/08/2068

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
07/08/2068	07/08/2074	07/08/2084	07/08/2091	08/08/2109
07/08/2074	07/08/2084	07/08/2091	08/08/2109	19/10/2123
सूर्य 24/11/2068	चंद्र 08/06/2075	मंगल 03/01/2085	राहु 20/04/2094	गुरु 26/09/2111
चंद्र 26/05/2069	मंगल 07/01/2076	राहु 21/01/2086	गुरु 12/09/2096	शनि 08/04/2114
मंगल 01/10/2069	राहु 07/07/2077	गुरु 28/12/2086	शनि 20/07/2099	बुध 14/07/2116
राहु 25/08/2070	गुरु 06/11/2078	शनि 06/02/2088	बुध 07/02/2102	केतु 20/06/2117
गुरु 14/06/2071	शनि 07/06/2080	बुध 02/02/2089	केतु 25/02/2103	शुक्र 19/02/2120
शनि 26/05/2072	बुध 06/11/2081	केतु 01/07/2089	शुक्र 25/02/2106	सूर्य 07/12/2120
बुध 01/04/2073	केतु 07/06/2082	शुक्र 01/09/2090	सूर्य 20/01/2107	चंद्र 08/04/2122
केतु 07/08/2073	शुक्र 06/02/2084	सूर्य 06/01/2091	चंद्र 20/07/2108	मंगल 15/03/2123
शुक्र 07/08/2074	सूर्य 07/08/2084	चंद्र 07/08/2091	मंगल 08/08/2109	राहु 19/10/2123

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 1 वर्ष 9 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>बुध - बुध</b> 07/08/2024 03/01/2027	<b>बुध - केतु</b> 03/01/2027 01/01/2028	<b>बुध - शुक्र</b> 01/01/2028 31/10/2030	<b>बुध - सूर्य</b> 31/10/2030 07/09/2031	<b>बुध - चंद्र</b> 07/09/2031 05/02/2033
बुध 09/12/2024 केतु 30/01/2025 शुक्र 25/06/2025 सूर्य 08/08/2025 चंद्र 21/10/2025 मंगल 11/12/2025 राहु 22/04/2026 गुरु 17/08/2026 शनि 03/01/2027	केतु 24/01/2027 शुक्र 26/03/2027 सूर्य 13/04/2027 चंद्र 13/05/2027 मंगल 03/06/2027 राहु 28/07/2027 गुरु 14/09/2027 शनि 10/11/2027 बुध 01/01/2028	शुक्र 21/06/2028 सूर्य 12/08/2028 चंद्र 06/11/2028 मंगल 05/01/2029 राहु 10/06/2029 गुरु 26/10/2029 शनि 07/04/2030 बुध 01/09/2030 केतु 31/10/2030	सूर्य 16/11/2030 चंद्र 12/12/2030 मंगल 30/12/2030 राहु 14/02/2031 गुरु 28/03/2031 शनि 16/05/2031 बुध 29/06/2031 केतु 17/07/2031 शुक्र 07/09/2031	चंद्र 20/10/2031 मंगल 19/11/2031 राहु 05/02/2032 गुरु 14/04/2032 शनि 05/07/2032 बुध 16/09/2032 केतु 16/10/2032 शुक्र 10/01/2033 सूर्य 05/02/2033
<b>बुध - मंगल</b> 05/02/2033 03/02/2034	<b>बुध - राहु</b> 03/02/2034 22/08/2036	<b>बुध - गुरु</b> 22/08/2036 28/11/2038	<b>बुध - शनि</b> 28/11/2038 07/08/2041	<b>केतु - केतु</b> 07/08/2041 03/01/2042
मंगल 26/02/2033 राहु 22/04/2033 गुरु 09/06/2033 शनि 05/08/2033 बुध 26/09/2033 केतु 17/10/2033 शुक्र 16/12/2033 सूर्य 03/01/2034 चंद्र 03/02/2034	राहु 22/06/2034 गुरु 24/10/2034 शनि 21/03/2035 बुध 31/07/2035 केतु 23/09/2035 शुक्र 25/02/2036 सूर्य 12/04/2036 चंद्र 29/06/2036 मंगल 22/08/2036	गुरु 10/12/2036 शनि 20/04/2037 बुध 16/08/2037 केतु 03/10/2037 शुक्र 18/02/2038 सूर्य 31/03/2038 चंद्र 08/06/2038 मंगल 27/07/2038 राहु 28/11/2038	शनि 02/05/2039 बुध 19/09/2039 केतु 15/11/2039 शुक्र 27/04/2040 सूर्य 15/06/2040 चंद्र 05/09/2040 मंगल 01/11/2040 राहु 29/03/2041 गुरु 07/08/2041	केतु 16/08/2041 शुक्र 09/09/2041 सूर्य 17/09/2041 चंद्र 29/09/2041 मंगल 08/10/2041 राहु 30/10/2041 गुरु 19/11/2041 शनि 13/12/2041 बुध 03/01/2042
<b>केतु - शुक्र</b> 03/01/2042 05/03/2043	<b>केतु - सूर्य</b> 05/03/2043 11/07/2043	<b>केतु - चंद्र</b> 11/07/2043 09/02/2044	<b>केतु - मंगल</b> 09/02/2044 07/07/2044	<b>केतु - राहु</b> 07/07/2044 26/07/2045
शुक्र 15/03/2042 सूर्य 05/04/2042 चंद्र 11/05/2042 मंगल 05/06/2042 राहु 08/08/2042 गुरु 04/10/2042 शनि 10/12/2042 बुध 08/02/2043 केतु 05/03/2043	सूर्य 12/03/2043 चंद्र 22/03/2043 मंगल 30/03/2043 राहु 18/04/2043 गुरु 05/05/2043 शनि 25/05/2043 बुध 12/06/2043 केतु 20/06/2043 शुक्र 11/07/2043	चंद्र 29/07/2043 मंगल 10/08/2043 राहु 11/09/2043 गुरु 10/10/2043 शनि 12/11/2043 बुध 13/12/2043 केतु 25/12/2043 शुक्र 29/01/2044 सूर्य 09/02/2044	मंगल 18/02/2044 राहु 11/03/2044 गुरु 31/03/2044 शनि 24/04/2044 बुध 15/05/2044 केतु 24/05/2044 शुक्र 17/06/2044 सूर्य 25/06/2044 चंद्र 07/07/2044	राहु 03/09/2044 गुरु 24/10/2044 शनि 24/12/2044 बुध 16/02/2045 केतु 10/03/2045 शुक्र 13/05/2045 सूर्य 01/06/2045 चंद्र 03/07/2045 मंगल 26/07/2045

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

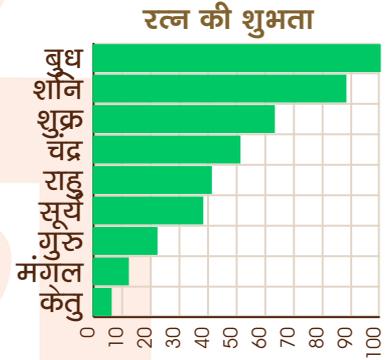
मूलांक	9
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, धन
नीलम	शनि	88%	धन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	63%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	51%	पराक्रम
गोमेद	राहु	41%	व्यय, व्यावसायिक हानि
माणिक्य	सूर्य	38%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
पुखराज	गुरु	22%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	12%	व्यावसायिक हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	6%	शत्रु व रोग



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	07/08/2005	50%	58%	25%	97%	47%	50%	88%	41%	6%
शनि	07/08/2024	12%	28%	0%	100%	22%	69%	100%	52%	0%
बुध	07/08/2041	50%	28%	12%	100%	22%	69%	88%	41%	6%
केतु	07/08/2048	12%	28%	25%	100%	22%	69%	75%	16%	31%
शुक्र	07/08/2068	12%	28%	12%	100%	22%	75%	94%	52%	19%
सूर्य	07/08/2074	56%	58%	25%	100%	34%	50%	75%	16%	0%
चंद्र	07/08/2084	50%	64%	12%	100%	22%	63%	88%	16%	0%
मंगल	07/08/2091	50%	58%	38%	97%	34%	63%	88%	16%	19%
राहु	08/08/2109	12%	28%	0%	100%	22%	69%	94%	58%	0%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/10/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी चन्द्रकुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपकी कुंडली में मांगलिक दोष समाप्त हो रहा है। अतः इस मंगल के प्रभाव से आप को अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु विवाह के पश्चात पति के स्वास्थ्य पर इसका अल्प मात्रा में प्रभाव हो सकता है लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। इसके शुभ प्रभाव से आप निर्विघ्न रूप से अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगी तथा जीवन में भाई बहनों का सुख तथा सहयोग भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त धनेश्वर्य एवं सुखोपभोग की सामग्री से सुसम्पन्न रहकर सुख एवं आनंद पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा परन्तु इसके प्रभाव से आपकी शादी थोड़ी विलम्ब से सम्पन्न होगी परन्तु वैवाहिक कार्य अत्यंत ही सुगमता पूर्वक सम्पन्न होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं एक दूसरे को हमेशा सहयोग प्रदान करेंगे। यदा कदा पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा परन्तु उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य निर्विघ्न समाप्त होते रहेंगे। मांगल्य स्थान होने से यदा कदा पति का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन दाम्पत्य सुख में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आएगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके आय स्रोत प्रशस्त रहेंगे जिससे आपको लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक रूप से आप सुदृढ़ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक शिक्षित महिला होंगी। पारिवारिक सुख को पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार में हमेशा

शान्ति रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा भाई बहनों से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी। इस प्रकार आप जीवन में सुख तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका उचित रूप से मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। इस प्रकार उचित मिलान करके यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो जीवन में पूर्ण सौभाग्य धनऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करके समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय यदि किसी युवक की कुंडली में अष्टम भाव में ही मंगल हो तो ऐसे विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आपके सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विलम्ब से सम्पन्न होंगे एवं इससे समय समय पर आप दोनों का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता रहेगा। जिससे सांसारिक सुखोपभोग में आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अलावा अन्य भावों में यदि मंगल स्थित हो तो उसके शुभ प्रभाव होंगे तथा आप सभी सुखों से युक्त होकर अपना दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगी। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

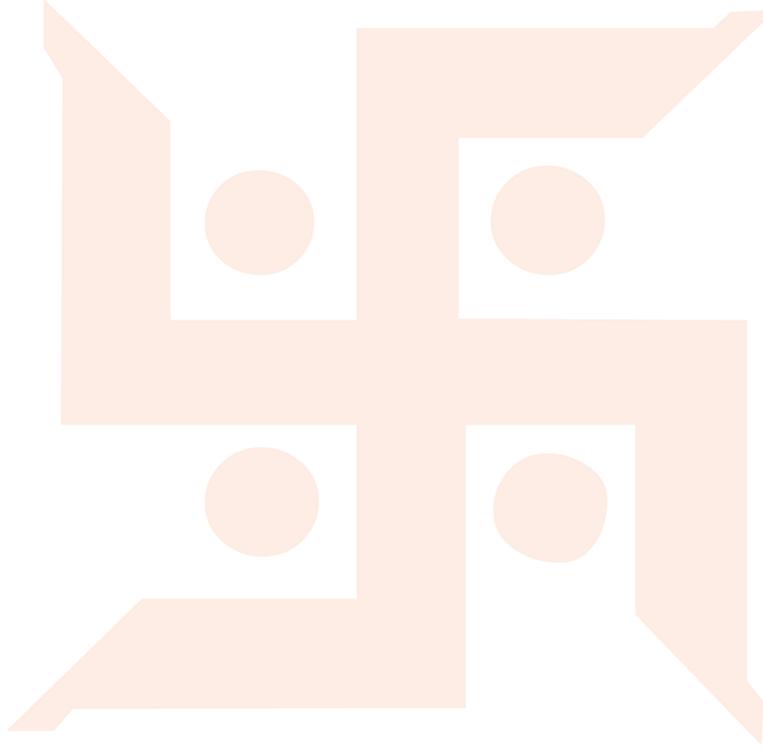
इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

## विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

### चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

## मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

## बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

## गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाग्रबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

## शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन,

बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुःखी एवं गुप्तरोगी होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

### शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

### राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

### केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध  
( 07/08/2024 - 07/08/2041 )

बुध की महादशा 07/08/2024 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 07/08/2041 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्युइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगे। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप अपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप

प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध  
( 07/08/2024 - 03/01/2027 )**

आपके लिए बुध की महादशा 07/08/2024 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 07/08/2024 को प्रारंभ होकर 03/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश और शेयर आदि से लाभ होगा। बुद्धिमत्ता उत्तम होगी। प्रत्येक कार्य सावधानी से करेंगे। प्रसन्न और आशावादी होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

दर्शन और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। नाटक, कला और बाल मनोविज्ञान में रुचि होगी। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। नौकरी में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे, सफल होंगे, नयी योजनाएं बनाएंगे। आपके पिता प्रसिद्ध और धनी बनेंगे, अध्यात्म में रुचि होगी। माता को धन का लाभ होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, उत्तम वस्त्र और आभूषण प्राप्त होंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, व्यापार और साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, विवाह हो सकता है, यात्रा संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं के कार्य में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुधवार को काली गाय को रोटी और गुड़ दें।

**अंतर्दशा :- बुध - केतु  
( 03/01/2027 - 01/01/2028 )**

आपके लिए बुध की महादशा 07/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/01/2027 को प्रारंभ होकर 01/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप कृतसंकल्प रहेंगे। विरोधियों पर विजय होगी। स्पर्धी परास्त होंगे। कार्यालय इच्छानुकूल होगा। अदालत में विजय होगी। प्रतियोगिता परीक्षा में सफल होंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्राएं होंगी; शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपके

पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता के धन में वृद्धि होगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अप्रत्याशित लाभ, अध्यात्म में रुचि और साझेदार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में वातावरण हर्षमय रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उदर रोग और संक्रमण से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए तेल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र  
( 01/01/2028 - 31/10/2030 )**

आपके लिए बुध की महादशा 07/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 01/01/2028 को प्रारंभ होकर 31/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। कर्ज का भुगतान कर सकेंगे। मुकदमे में जीत होगी। अधिक मसालेदार और गरिष्ठ भोजन से बचेंगे तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किरायेदार सहयोग करेंगे। सहकर्मियों से संबंध अच्छे रहेंगे। धन संचित होगा। सुख के साधन क्रय करेंगे। विचार आध्यात्मिक और दया से पूर्ण होंगे। लोकप्रियता और साख में वृद्धि होगी। प्रसन्नता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं मगर बचत भी करेंगे। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे। माता की कला में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसन्नता, अचानक परिवर्तन, अचल संपत्ति का लाभ, समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, भाग्य साथ देगा। अगर वे कार्यरत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धनी और सौभाग्यशाली होंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे, स्पर्धियों पर विजय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के

लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य**  
**( 31/10/2030 - 07/09/2031 )**

आपके लिए बुध की महादशा 07/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/10/2030 को प्रारंभ होकर 07/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। सहकर्मी और सहयोग करेंगे। किरायेदार भी सहयोग करेंगे।

आपको धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। प्रशासनिक क्षमता उत्तम होगी। अध्यात्म में रुचि होगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। यात्रा और कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है, उनके खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, उच्च पद मिलेगा। माता के पास सुख-साधन होंगे, साहस से हर समस्या का सामना करेंगी। आपके भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, सरकार से लाभ होगा, जीवनसाथी के माध्यम से धन आएगा, अध्यात्म में रुचि होगी।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे जबकि व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः